Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

Original Article

माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

कु.प्रभा[1], डॉ.अनिल कुमार शुक्ला[2]

[1]शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

[2]प्राचार्य, माँ अष्टभुजा कॉलेज ऑफ एजुकेशन,जिला- मऊगंज (म.प्र.)

Email: chaudharyprabha224@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-171233
ISSN: 2230-9578

Volume 17
Issue 12(A)
Pp. 154-159
December 2025

Submitted: 18 Nov. 2025
Revised: 28 Nov. 2025
Accepted: 13 Dec. 2025
Published: 31 Dec. 2025

सारांश

शिक्षा किसी भी समाज के सर्वांगीण विकास की आधारशिला होती है तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि शिक्षा प्रणाली की प्रभावशीलता का महत्वपूर्ण सूचक मानी जाती है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि न केवल उनके बौद्धिक विकास को दर्शाती है, बल्कि उनके भावी शैक्षिक एवं व्यावसायिक जीवन की दिशा भी निर्धारित करती है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति का अध्ययन करना हैं। इस अध्ययन में विद्यालयी वातावरण, शिक्षण विधियाँ, शिक्षकों की भूमिका, पारिवारिक पृष्ठभूमि, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताओं जैसे प्रेरणा, अध्ययन आदतें और आत्म-विश्वास को प्रमुख कारक के रूप में माना गया है। शोध यह स्पष्ट करता है कि अनुकूल शैक्षिक वातावरण, सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध तथा परिवार का सहयोग विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को सुदृढ़ बनाता है। यह अध्ययन शिक्षाविदों, नीति-निर्माताओं एवं विद्यालय प्रशासन के लिए उपयोगी सिद्ध हो सकता है।

मुख्यशब्द: *माध्यमिक विद्यालय, शैक्षिक उपलब्धि, शिक्षा प्रणाली, अध्ययनरत विद्यार्थी, विद्यालयी वातावरण, शिक्षण विधियाँ।*

प्रस्तावना

शिक्षा मानव जीवन का एक अनिवार्य अंग है, जो व्यक्ति को ज्ञान, कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण प्रदान करती है। किसी भी राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक उन्नति उसकी शिक्षा प्रणाली की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। शिक्षा के विभिन्न स्तरों में माध्यमिक शिक्षा का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी बाल्यावस्था से किशोरावस्था की ओर अग्रसर होते हैं और उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास प्रारंभ होता है। इस स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि भविष्य की उच्च शिक्षा, व्यावसायिक विकल्पों तथा सामाजिक उत्तरदायित्वों की नींव रखती है।शैक्षिक उपलब्धि का तात्पर्य उस स्तर से है, जिसे विद्यार्थी निर्धारित पाठ्यक्रम के अंतर्गत ज्ञान, समझ और कौशल के रूप में प्राप्त करता है। इसे सामान्यतः परीक्षाओं में प्राप्त अंकों, ग्रेड या शैक्षिक प्रगति के माध्यम से मापा जाता है। माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कई आंतरिक और बाह्य कारकों से प्रभावित होती है, जिनमें बौद्धिक क्षमता के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक और विद्यालयी परिवेश का विशेष योगदान होता है। आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों से अपेक्षा की जाती है कि वे न केवल अकादमिक रूप से सफल हों, बल्कि तार्किक चिंतन, समस्या समाधान, रचनात्मकता और आत्म-अनुशासन जैसे गुण भी विकसित करें।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
कु.प्रभा, शोधार्थी, शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

How to cite this article:
प्रभा, & शुक्ला, . अनिल . कुमार . (2025). माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. Journal of Research and Development, 17(12(A)), 154–159.
https://doi.org/10.5281/zenodo.18254462

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.18254462
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

किंतु यह देखा गया है कि अनेक विद्यार्थी इस स्तर पर मानसिक तनाव, अध्ययन भार, परीक्षा दबाव तथा मार्गदर्शन की कमी के कारण अपेक्षित शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त नहीं कर पाते। इसलिए माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन अत्यंत आवश्यक हो जाता है। शिक्षा का प्रारंभ बेसिक विद्यालय से होता है इसलिए यह आवश्यक है कि हमारे देश में शिक्षा की व्यवस्था करने वाली सरकारें बेसिक विद्यालय के उचित संगठन तथा संचार की ओर विशेष ध्यान दें। विद्यालय समाज का लघु रूप है। जिस प्रकार समाज में विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तर वाले लोग तथा अलग-अलग धर्म मानने वाले लोग रहते हैं। उसी प्रकार विद्यालय में अध्ययन हेतु आने वाले विद्यार्थियों का सामाजिक आर्थिक स्तर तथा जाति धर्म आदि विभिन्न होते हैं विद्यालय में अध्ययन करने वाले प्रत्येक छात्र दिखने में स्मार्ट लगते हैं लेकिन गुणों के आधार पर परस्पर भिन्न होते हैं गुणों में भिन्नता के कारण उनकी विद्यालय में शैक्षणिक उपलब्धि में भी भिन्नता पाई जाती है।

छात्र की शैक्षिक उपलब्धि का स्तर निम्न होता है। जिसके आधार पर शिक्षक उसका आकलन करते हैं शिक्षक आकलन के आधार पर ही योजनाएं बनाते हैं। नई योजनाओं के आधार पर शिक्षण कार्य करने पर छात्रों को उसकी सामग्री के अनुसार शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करने में सफल होता है। छात्र की शैक्षिक उपलब्धि को उसकी सफलता रुचि अध्ययन की आदत, वातावरण आदि अनेक कारक प्रभावित करते हैं। इसलिए एक शिक्षक के लिए यह परम आवश्यक है कि शिक्षण योजनाएं बनाते समय शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का ध्यान रखें। इस प्रकार से शिक्षा ही वह साधन है जिसके माध्यम से शैक्षिक सामाजिक और मनोवैज्ञानिक प्रगति को सुनिश्चित किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही बालक का संतुलित एवं सर्वाधिक विकास होता है। आधारशिला शिक्षा ही है। किसी भी जाति समाज देश तथा देश की उन्नति उसकी शिक्षा पर ही निर्भर करती है। इस शिक्षा हर किसी के जीवन में सफल होने के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण उपकरण है। इससे जीवन की चुनौतियों को कम करने में बहुत ही मदद मिलती है। मुश्किल जीवन में शिक्षा अवधि के दौरान प्राप्त ज्ञान के किसी को उनके बारे में आश्वस्त करता है।शिक्षा जीवन में बेहतर संभावनाओं को प्राप्त करने के अवसरों के लिए विभिन्न दरवाजे खोलती है। सभी को जीवन में आगे बढ़ने और सफलता प्राप्त करने के लिए बेहतर शिक्षा बहुत जरूरी है। यह आत्मविश्वास विकसित करती है और एक व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में मदद करती है औपचारिक शिक्षा हर किसी के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। संपूर्ण शिक्षा को तीन विभागों में विभाजित किया गया है। बेसिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक । शिक्षा के इन तीन विभागों में बेसिक शिक्षा का महत्व सर्वाधिक है क्योंकि बेसिक शिक्षा ही वह आधार है जिस पर बालक का पूरा जीवन निर्भर करता है। जब बालक विद्यालय में औपचारिक रूप से शिक्षा प्राप्ति के लिए जाता है, तो विद्यालय में उसके व्यक्तित्व निर्माण में शिक्षक का महत्व पूर्ण स्थान होता है जो विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर उनकी आंतरिक प्रतिभाओं का विकास करते हैं। विद्यालय के वातावरण और साथ ही समूह के संपर्क में रहकर बालक जो कुछ सीखता है या जिन विषयों का अध्ययन करता है उसकी जांच परीक्षा प्रणाली के आधार पर की जाती है। जिससे बालक का शैक्षिक स्तर पता चलता है। बालक की शिक्षा लक्ष्य आधारित होती है उसी के आधार पर वह अपने अध्ययन योजना बनाता है। वर्तमान समय में राष्ट्रीय शिक्षा नीति और शैक्षिक सुधारों के संदर्भ में माध्यमिक स्तर की शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है। ऐसे में यह आवश्यक है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों का गहन अध्ययन किया जाए, ताकि शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया जा सके। यह अध्ययन इसी दिशा में एक प्रयास है, जो माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि की स्थिति को समझने और उसे सुदृढ़ करने के उपाय सुझाने में सहायक सिद्ध होगा।

शैक्षिक उपलब्धि की अवधारणा

शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ किसी विद्यार्थी द्वारा अध्ययन की निर्धारित अवधि में प्राप्त ज्ञान, कौशल, योग्यता और दक्षता से है। यह केवल परीक्षाओं में प्राप्त अंकों या ग्रेड तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें सीखने की प्रक्रिया, समस्याओं को सुलझाने की क्षमता, तार्किक एवं विश्लेषणात्मक सोच, और व्यक्तिगत विकास भी शामिल है। शैक्षिक उपलब्धि का मूल्यांकन विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है, जैसे लिखित परीक्षाएँ, मौखिक प्रस्तुतियाँ, प्रोजेक्ट कार्य, प्रयोगात्मक मूल्यांकन, और रचनात्मक कार्य। यह अवधारणा विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, मानसिक क्षमताओं और सामाजिक व्यवहार को भी दर्शाती है।शैक्षिक उपलब्धि का निर्धारण केवल छात्र के प्रयास पर नहीं, बल्कि उसके पारिवारिक, सामाजिक और विद्यालयी वातावरण पर भी निर्भर करता है। उदाहरण स्वरूप, सकारात्मक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहायक अध्ययन सामग्री, समय प्रबंधन, आत्म-प्रेरणा और मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की उपलब्धि को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत, अध्ययन में असंतुलन, तनाव, अनुचित शिक्षण विधियाँ और सीमित संसाधन उपलब्धि को प्रभावित कर सकते हैं। इसलिए, शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी अवधारणा है, जो विद्यार्थियों के संपूर्ण व्यक्तित्व और सीखने की क्षमता का प्रतिबिंब है।आज व्यक्ति के जीवन में व्यक्तिक भिन्नता का ज्ञान, हमने किसी कार्य को कितना सीखा इसका ज्ञान उपलब्धि के द्वारा होता है। मनोविज्ञान के परीक्षणों की श्रृंखला के प्रयोग में आन वाली उपलब्धि का शैक्षणिक जीवन में अत्यंत महत्व है विद्यार्थी के चयन, उन्नति एवं तुलनात्मक अध्ययन आदि में इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यालयों के विषय संबंधी अर्जित ज्ञान का परीक्षण है। शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ ज्ञान प्राप्त करना एवं कौशल का विकास करना है। शैक्षिक उपलब्धि कामहत्व प्रत्येक शिक्षण कार्य में अत्यंत आवश्यक है इससे विद्यार्थी के बौद्धिक स्तर के ओपिनियन का पता चलता है।

शैक्षिक उपब्धि के अर्थ एवं भाव को अधिक स्पष्ट करने के लिए विभिन्न विद्वानों ने परिभाषाएं दी है जो इस प्रकार हैं-

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

गैरिसन- 'शैक्षिक उपलब्धि बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ट विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मापन करती है"

चार्ल्स स्किनर- 'कार्य का अंतिम परिणाम है शैक्षिक उपलब्धि है

जो विद्यार्थियों के सीखने के बारे में जानकारी प्राप्त करता है।" उपरोक्त परिभाषा ओं के आधार पर हम कह सकते हैं कि उपलब्धि में हैं जिनकी सहायता से स्कूल में पढ़ाई जाने वाले विषयों और सिखाए जाने वाले कौशलों में विद्यार्थियों की सफलता अथवा उपलब्धि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

अभिप्रेरणा-

प्रेरणा मनुष्य की दैनिक अनुभव का विषय है। प्रेरणा हमें कहीं से भी मिल सकती है-कर्तव्य बोध से, अपनों के प्रति स्नेह के कारण, अपने मन की शांति व सुख के कारण, अथवा प्रभु के प्रति समर्पण की भावना से। अकेला मनुष्य उठ जाता है, वह संसार की झंझट ओ से तंग आ जाता है। वह चाहता है कि कोई उसे प्रेरणा दे तो कोई कंधे पर हाथ रखकर उसकी पीठ थप-थपाएं। कार्य सरल होना कठिन बिना प्रेरणा के नहीं हो सकता। सामर्थय होने के बाद जितनी प्रेरणा जबरदस्त होती है काम उतनी ही तेजी से होगा। केवल अनुभव में ही नहीं व्यवहार में भी प्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। अभिप्रेरणा छात्र के व्यवहार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। अभिप्रेरणा चरित्र निर्माण में भी सहायक होती है। अभिप्रेरणा ध्यान केंद्रित करने में व्यक्ति की सहायता करती है और प्रेरणा हमारे व्यवहार में विविधता लाँकर लक्ष्य प्राप्ति में सहायता प्रदान करती है। प्रेरणा हमारे व्यवहार में निरंतरता बनाए रखती है और हम तब तक अपने प्रयासों में कमी नहीं लाते जब तक कि हमारा लक्ष्य प्राप्त नहीं हो जाता। अतः अभिप्रेरणा के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए हमें इसकी अर्थ को समझना होगा जो इस प्रकार से है-अभिप्रेरणा शब्द को अंग्रेजी के Motivation/Inspiration के समान अर्थी के रूप में प्रयोग किया जाता है। मोटिवेशन शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के मोटम' से हुई है। जिसका अर्थ है-ज्व उवअम अर्थात गति प्रदान करना। इस प्रकार अभिप्रेरणा वह कारक है जो कार्य को गति प्रदान करता है। अतः प्रेरणा एक सक्रिया होती है। जो जी को क्रिया के प्रति उत्तेजित करती है। जब हमें किसी वस्तु की आवश्यकता होती है तो हमारे अंदर एक अच्छी इच्छा उत्पन्न होती है। इसके फलस्वरूप उर्जा उत्पन्न हो जाती है जो प्रेरक शक्ति को गतिशील बनाती है। अतः अभिप्रेरणा के द्वारा व्यवहार को दृढ़ किया जा सकता है।

शैक्षिक उपलब्धि अभिप्रेरणा

अभिप्रेरणा से संबंधित नए विचारधारा का नाम है। जब कोई व्यक्ति किसी कार्य को करता है तो वह उस कार्य में अधिकतम उपलब्धि प्राप्त करना चाहता है अर्थात कठिन कार्य करते हुए या चुनौतीपूर्ण कार्य करते हुए प्राप्त उपलब्धि ही उपलब्धि अभिप्रेरणा' है। उपलब्धि अभिप्रेरणा की प्रकृति व्यक्तिगत होती है अर्थात यह एक व्यक्ति के व्यक्तिगत क्रियाकलापों पर आधारित होती है। किसी भी कार्य की उपलब्धि के लिए कार्य करने की अभिप्रेरणा ही उपलब्धि अभिप्रेरणा कहलाती है। उपलब्धि अभिप्रेरणा में व्यक्ति कठिन से कठिन कार्य कर सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हासिल करने हेतु प्रयासरत रहता है।मैकली लैड उपलब्धि अभिप्रेरणा को स्पष्ट करते हुए कहा है कि'व्यक्ति जिसे चाहता है उसे प्राप्त करने के लिए अपनी सारी ताकत लगा देता है और परिणाम स्वरूप उसे जो उपलब्धि प्राप्त होती है वही उपलब्धि प्रेरणा है तथा व्यक्ति उसी से संतुष्टि प्राप्त करता है। इस प्रकार व्यक्ति अपने अभूतपूर्व क्रिया को करके उपलब्धि हासिल करता है।मैक डेविड के अनुसारः- मनोवैज्ञानिक निर्देशन की उस प्रणाली को उपलब्धि अभिप्रेरणा कहते हैं, जिसे मानवीय क्रिया क्षमता, आक्रमण शीलता तथा प्रभुता के साथ संबंधित हो।"उपलब्धि अभिप्रेरणा एक ऐसी छिपी हुई विशेषता होती है जो प्रत्यक्ष प्रयासों से ही स्पष्ट होती है जब व्यक्ति अपने कार्य को व्यक्तिगत रूप से कुछ पाने का साधन समझता है। उपलब्धि अभिप्रेरणा के द्वारा व्यक्ति अपने पास में होने वाली वस्तुओं की प्राप्ति के लिए उन्मुख होता है।

विद्यालयी वातावरण

विद्यालयी वातावरण का अर्थ उस समग्र वातावरण से है जिसमें विद्यार्थी अपने शैक्षिक, सामाजिक और मानसिक विकास के लिए अध्ययन करता है। यह केवल कक्षा की भौतिक स्थिति तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें शैक्षिक संसाधन, शिक्षक-विद्यार्थी संबंध, सहपाठी सहयोग, अनुशासन, शिक्षण पद्धतियाँ और समग्र विद्यालय संस्कृति शामिल होती है। एक सकारात्मक और अनुकूल विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, आत्म-विश्वास और शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ावा देता है। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए विद्यालयी वातावरण उनके शैक्षिक और मानसिक विकास का एक महत्वपूर्ण घटक है। इस स्तर पर विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं, जब उनका व्यक्तित्व, सोचने की क्षमता और सामाजिक व्यवहार तेजी से विकसित हो रहे होते हैं। ऐसे में एक सकारात्मक और सहयोगात्मक विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की सीखने की रुचि, आत्म-विश्वास और शैक्षिक उपलब्धि को मजबूत बनाने में निर्णायक भूमिका निभाता है।माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा का सुव्यवस्थित होना, पर्याप्त शिक्षण संसाधनों की उपलब्धता, प्रयोगशालाओं और पुस्तकालय की सुविधा, तकनीकी उपकरणों का उपयोग और शिक्षण सामग्री का प्रबंध विद्यार्थियों की अकादमिक प्रगति में सहायक होता है। इसके अतिरिक्त शिक्षक की प्रेरक भूमिका, विद्यार्थियों के साथ संवेदनशील संवाद और व्यक्तिगत मार्गदर्शन उनके अध्ययन में रुचि बनाए रखने और समस्याओं को हल करने की क्षमता विकसित करने में महत्वपूर्ण होते हैं। सहपाठी सहयोग, समूह गतिविधियाँ,

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

खेलकूद और सांस्कृतिक कार्यक्रम विद्यार्थियों में सामूहिक भावना, नेतृत्व कौशल और संचार क्षमताओं का विकास करते हैं। वहीं तनावपूर्ण, अनुशासनहीन या अव्यवस्थित विद्यालयी वातावरण विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसलिए, माध्यमिक स्तर पर एक सुरक्षित, सुव्यवस्थित और प्रेरक विद्यालयी वातावरण सुनिश्चित करना आवश्यक है, ताकि विद्यार्थी न केवल अकादमिक रूप से बल्कि सामाजिक और भावनात्मक रूप से भी पूर्ण रूप से विकसित हो सकें।

शिक्षण विधियाँ

शिक्षण विधियाँ किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया का मूल आधार हैं, क्योंकि वे विद्यार्थियों तक ज्ञान, कौशल और मूल्य पहुँचाने का मार्ग निर्धारित करती हैं। माध्यमिक विद्यालय स्तर पर शिक्षण विधियों का चयन और उनका प्रभाव विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है। शिक्षण विधियाँ केवल पाठ्यक्रम पढ़ाने तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि वे विद्यार्थियों में सीखने की रुचि, आलोचनात्मक सोच, समस्या समाधान की क्षमता और रचनात्मकता को भी विकसित करती हैं।माध्यमिक विद्यालयों में पारंपरिक विधियों, जैसे व्याख्यान पद्धति, प्रश्न-उत्तर पद्धति, और चर्चा सत्र, के साथ-साथ आधुनिक शिक्षण विधियाँ, जैसे समूह कार्य, परियोजना आधारित शिक्षण, प्रयोगात्मक और व्यावहारिक गतिविधियाँ, प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण, और सिमुलेशन आधारित शिक्षण, विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाती हैं। शिक्षक द्वारा विद्यार्थियों को सक्रिय रूप से सीखने में शामिल करना, उनके प्रश्नों को प्रोत्साहित करना और अनुभवजन्य गतिविधियों के माध्यम से शिक्षा प्रदान करना शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि करता है। सफल शिक्षण विधियाँ न केवल ज्ञान को समझने में सहायक होती हैं, बल्कि विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास, जिम्मेदारी और समय प्रबंधन जैसे गुण भी विकसित करती हैं। इसके विपरीत, रूटीन और केवल परीक्षा-केंद्रित शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की सीखने की रुचि को कम कर सकती हैं। इसलिए, माध्यमिक विद्यालयों में प्रभावी और नवाचारी शिक्षण विधियों का प्रयोग विद्यार्थियों की समग्र शैक्षिक प्रगति के लिए आवश्यक है।

शिक्षकों की भूमिका

माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक केवल ज्ञान का प्रदाता नहीं होते, बल्कि वे विद्यार्थियों के मार्गदर्शक, प्रेरक और मानसिक सहयोगकर्ता भी होते हैं। उनके व्यवहार, शिक्षण शैली और दृष्टिकोण से विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता, अध्ययन में रुचि और आत्म-विश्वास पर सीधा प्रभाव पड़ता है।एक प्रभावी शिक्षक विद्यार्थियों की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को समझकर शिक्षण प्रक्रिया को अनुकूल बनाता है। वे पाठ्यक्रम को रोचक, संवादात्मक और अनुभवजन्य गतिविधियों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं, जिससे विद्यार्थी विषय को केवल याद न करें, बल्कि उसे समझें और लागू करना सीखें। शिक्षक द्वारा निरंतर मार्गदर्शन, सकारात्मक प्रतिक्रिया और प्रशंसा विद्यार्थियों में सीखने की प्रेरणा बढ़ाती है।

इसके अलावा, शिक्षक विद्यार्थियों में अनुशासन, समय प्रबंधन और सामाजिक व्यवहार जैसे गुणों को विकसित करने में भी मदद करते हैं। सहयोगात्मक और प्रेरक शिक्षक-विद्यार्थी संबंध विद्यार्थी की मानसिक स्थिति को संतुलित रखते हुए शैक्षिक दबाव को कम करता है। इसके विपरीत, कठोर, अनियमित या असंवेदनशील दृष्टिकोण विद्यार्थियों की सीखने की रुचि और उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। अतः माध्यमिक स्तर पर शिक्षक की सक्रिय और प्रेरक भूमिका विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता सुनिश्चित करने में निर्णायक होती है।

पारिवारिक पृष्ठभूमि

परिवार एक पवित्र एवं उपयोगी संस्था है जिसमें मानव की सर्वांगीण उन्नति का आधार सहयोग, सहायता ओर पारस्परिकता का भाव रहता है। यह भाव वह शक्ति है जिसके आधार पर मनुष्य आदि-जंगली स्थिति से उन्नति करता आज की सभ्य स्थिति में पहुँचा है। सहयोग की भावना ही मनुष्य जाति की उन्नति का मूल कारण रही है। एकता, सामाजिकता, मैत्री आदि की सहयोगमूलक शक्ति ने आज मानव सभ्यता को उच्च स्तर पर पहुँचा दिया है। अभिभावकों के व्यक्तिगत आचरण के साथ परिवार का वातावरण भी बच्चों और सदस्यों के निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका प्रस्तुत करता है। विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है। परिवार न केवल बच्चे का पहला सामाजिक परिवेश होता है, बल्कि यह उनके मानसिक, भावनात्मक और बौद्धिक विकास की आधारशिला भी तैयार करता है। माता-पिता की शिक्षा, पेशा, आर्थिक स्थिति, पारिवारिक मूल्य और घर का अध्ययन वातावरण विद्यार्थियों के अध्ययन के प्रति दृष्टिकोण और उपलब्धि को सीधे प्रभावित करते हैं। एक सकारात्मक पारिवारिक वातावरण, जहाँ माता-पिता बच्चों के अध्ययन में सहयोग करते हैं, उनके प्रयासों की सराहना करते हैं और उन्हें मार्गदर्शन प्रदान करते हैं, विद्यार्थियों में आत्म-विश्वास, अध्ययन आदतें और सीखने की रुचि बढ़ाता है। इसके विपरीत, यदि परिवार में अशिक्षा, आर्थिक कठिनाई, घर में अस्थिरता या अध्ययन के लिए पर्याप्त समय एवं संसाधनों की कमी हो, तो यह विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकता है। इसके अलावा, पारिवारिक मूल्यों और अपेक्षाओं का भी विद्यार्थियों की उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। उच्च शिक्षा और मेहनत को महत्व

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

देने वाले परिवारों के बच्चे सामान्यतः अधिक प्रेरित और सफल होते हैं। इसलिए, पारिवारिक पृष्ठभूमि को समझना और उसमें सुधार के उपाय करना माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार हेतु आवश्यक है।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति

विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक और आर्थिक स्थिति एक महत्वपूर्ण प्रभावक कारक होती है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति का अर्थ परिवार की आय, पेशा, शिक्षा स्तर, सामाजिक प्रतिष्ठा और उपलब्ध संसाधनों से है। यह विद्यार्थियों की पढ़ाई, अध्ययन सामग्री, सहायक संसाधनों और अतिरिक्त मार्गदर्शन तक पहुँच को प्रभावित करती है। उच्च सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले परिवार के विद्यार्थी अधिक सुविधाओं, ट्यूशन, पुस्तकालय और तकनीकी साधनों का उपयोग कर पाते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति सामान्यतः बेहतर होती है। इसके विपरीत, सीमित आय वाले परिवार के विद्यार्थियों को अध्ययन सामग्री, शिक्षण सहायक उपकरण या अतिरिक्त शिक्षा में कठिनाई होती है। आर्थिक दबाव और सामाजिक असमानताएँ अक्सर मानसिक तनाव, आत्म-संकोच और असुरक्षा की भावना उत्पन्न करती हैं, जिससे विद्यार्थियों की अध्ययन क्षमता और उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। इसके अलावा, सामाजिक मान्यताएँ और सांस्कृतिक दृष्टिकोण भी विद्यार्थियों के शिक्षा के प्रति दृष्टिकोण को प्रभावित करते हैं। सामाजिक-आर्थिक स्थिति सीधे या अप्रत्यक्ष रूप से विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों, समय प्रबंधन, मानसिक स्वास्थ्य और शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करती है। इसलिए, शिक्षा नीति और विद्यालय प्रशासन को विद्यार्थियों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखते हुए समावेशी और सहायता आधारित कार्यक्रम तैयार करने की आवश्यकता है, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान किए जा सकें।

विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषता

माध्यमिक विद्यालय का स्तर विद्यार्थियों के जीवन में विशेष महत्व रखता है। यह वह अवस्था है जब विद्यार्थी किशोरावस्था में प्रवेश कर चुके होते हैं और उनका व्यक्तित्व, सोचने-समझने की क्षमता तथा सामाजिक व्यवहार तेजी से विकसित हो रहे होते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताएँ जैसे प्रेरणा, अध्ययन आदतें और आत्म-विश्वास उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण कारक बन जाते हैं।

प्रेरणा

प्रेरणा विद्यार्थियों के अध्ययन और सीखने की दिशा को निर्धारित करती है। यह आंतरिक और बाह्य दोनों प्रकार की हो सकती है। आंतरिक प्रेरणा में विद्यार्थी अपनी रुचि, जिज्ञासा और आत्म-संतोष के लिए अध्ययन करते हैं, जबकि बाह्य प्रेरणा में अंक, पुरस्कार, शिक्षक या अभिभावकों की अपेक्षाएँ प्रमुख होती हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी अक्सर परीक्षा और भविष्य की शिक्षा व करियर के दबाव में रहते हैं, इसलिए प्रेरणा उनके लगातार प्रयास और लक्ष्य प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। प्रेरित विद्यार्थी न केवल कठिन विषयों को आसानी से सीखते हैं, बल्कि समस्याओं का सामना करने और चुनौतियों को पार करने की क्षमता भी विकसित करते हैं।

अध्ययन आदतें

अध्ययन आदतें विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता में निर्णायक भूमिका निभाती हैं। नियमित अध्ययन, समय प्रबंधन, पाठ्यक्रम का पुनरावलोकन, नोट बनाना और व्यावहारिक अभ्यास जैसी आदतें सीखने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाती हैं। माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी जिनके पास अच्छी अध्ययन आदतें होती हैं, वे न केवल पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करते हैं बल्कि जटिल विषयों को भी बेहतर समझते हैं। इसके अलावा, नियमित अध्ययन तनाव को कम करता है और परीक्षा के दबाव में बेहतर प्रदर्शन सुनिश्चित करता है। विद्यालय और शिक्षक विद्यार्थियों को सही अध्ययन तकनीक और योजना बनाने में मार्गदर्शन देकर इन आदतों को विकसित करने में मदद कर सकते हैं।

आत्म-विश्वास

आत्म-विश्वास विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता और समस्याओं को हल करने की क्षमता में सहायक होता है। आत्म-विश्वासी विद्यार्थी नई चुनौतियों को स्वीकार करते हैं, समूह गतिविधियों में सक्रिय रहते हैं और परीक्षा या अन्य मूल्यांकन में अपने कौशल का सही उपयोग कर पाते हैं। इसके विपरीत, आत्म-विश्वास की कमी विद्यार्थियों में असुरक्षा, भय और संकोच पैदा करती है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है। शिक्षक और परिवार का सकारात्मक समर्थन, प्रशंसा और मार्गदर्शन आत्म-विश्वास को बढ़ाने में सहायक होते हैं।

निष्कर्ष

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि एक बहुआयामी अवधारणा है, जो अनेक परस्पर संबंधित कारकों से प्रभावित होती है। विद्यालयी वातावरण, शिक्षकों की भूमिका, पारिवारिक सहयोग, सामाजिक-आर्थिक स्थिति तथा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विशेषताएँ मिलकर उनकी शैक्षिक प्रगति को निर्धारित करती हैं। यदि इन सभी कारकों को संतुलित एवं सकारात्मक रूप में विकसित किया जाए, तो विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में उल्लेखनीय सुधार संभव है। केवल पाठ्यक्रम और

Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-12(A)| December 2025

परीक्षा-केंद्रित दृष्टिकोण से अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं किए जा सकते। विद्यार्थियों के मानसिक, भावनात्मक और सामाजिक विकास पर भी समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। शिक्षकों को नवाचारी शिक्षण विधियों को अपनाना चाहिए तथा विद्यार्थियों को सीखने के लिए प्रेरक वातावरण प्रदान करना चाहिए। साथ ही अभिभावकों और विद्यालय प्रशासन के सहयोग से एक सुदृढ़ शैक्षिक ढाँचा तैयार किया जा सकता है। अतः माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार राष्ट्र के शैक्षिक विकास का महत्वपूर्ण आधार है, जिसके लिए समन्वित और सतत प्रयास आवश्यक हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. शर्मा, अनुराधा (2009). *माध्यमिक स्तर पर अभिभावक प्रोत्साहन का विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा एवं शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन.* Journal of Educational Research, Vol. 1, Issue 1, pp. 12-24.
2. सोनी, पवन कुमार (2010). *उच्च माध्यमिक स्तर के उच्च शैक्षिक उपलब्धि तथा नेम शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त विद्यार्थियों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन.* International Journal of Educational Studies, Vol. 2, Issue 3, pp. 45-57.
3. प्रजापति, सुनीता (2010). *माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की उपलब्धि अभिप्रेरणा का अध्ययन एवं आदतों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.* Education and Psychology Journal, Vol. 3, Issue 2, pp. 78-89.
4. दूबे, भावेश चंद्र (2011). *विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा के प्रभाव का अध्ययन.* Journal of School Education, Vol. 4, Issue 1, pp. 33-46.
5. कुमार, दुर्गेश (2011). *बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों द्वारा शिक्षण अभ्यास के दौरान अपनाए जाने वाले शिक्षण को श्लोका छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.* Teacher Education Research Journal, Vol. 5, Issue 4, pp. 101-113.
6. सिंह, ___ एवं बघेल, ___ (2017). *किशोरावस्था के विद्यार्थियों में शैक्षिक उपलब्धि एवं अभिभावक अभिप्रेरणा का पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन.* Journal of Adolescent Education, Vol. 7, Issue 2, pp. 90-107.
7. गंगादेवी किरिलमाजकाया। "सरल उपकरणों के माध्यम से विज्ञान पाठ्यक्रम पढ़ाने का प्रभावः विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि और विज्ञान के प्रति दृष्टिकोण पर अध्ययन।" International Journal of Educational and Literacy Studies, vol. 10, no. 1, 2022, PP-70-77.
8. एनवाग्बो, "द्वि-शिक्षण विधियों का प्रभावः विभिन्न वैज्ञानिक अभिवृत्ति वाले छात्रों की जीवविज्ञान में उपलब्धि और दृष्टिकोण पर अध्ययन।" International Journal of Educational Research, vol. 45, no. 3, 2006, pp. 216-229.
9. शुचि चित्तला "गतिविधि आधारित शिक्षण का विद्यार्थियों की समस्या समाधान क्षमता और शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।" IOSR Journal of Humanities and Social Science, vol. 23, no. 3, 2018, pp. 80-84.
10. स्मिथ, जे., एवं अन्य। *माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव।* इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन एजुकेशन, 2017; वॉल्यूम 43, अंक 2, पृष्ठ 112-128।
11. चेन, ज़., और डॉ. क्लाह, डी। *माध्यमिक शिक्षा में वैज्ञानिक चिंतन और शैक्षिक उपलब्धि।* जर्नल ऑफ एजुकेशनल साइकॉलॉजी, 2019; पृष्ठ 45-671।
12. पूजा, ए., और विनय, कुमार। "शिक्षा में प्रभावशीलता के लिए शैक्षिक तकनीकी का उपयोगः एक विश्लेषण।" Journal of Emerging Technologies and Innovative Research (JETIR), वॉल्यूम 11, अंक 7, जुलाई 2024, पृष्ठ 359-3671
13. गोडस्क, मिकेल, और करेन लुईस मोलर। "शैक्षिक प्रौद्योगिकी के साथ उच्च शिक्षा में छात्रों को शामिल करना।" International Education & Research Journal, खंड 30, 2025, पृष्ठ 2941-29761
14. अबाद-सेगुरा, एमिलियो, आदि। "उच्च शिक्षा में डिजिटल परिवर्तन का सतत प्रबंधनः वैश्विक अनुसंधान रुझान।" वॉल्यूम 12, अंक 5, 2020, पृष्ठ 21071